ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो ।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ।। ॐ जय
सिध्दारथ घर जन्में, वैभव था भारी । स्वामी वैभव था भारी।
बाल बह्मचारी व्रत, पाल्यो तपधारी ।। ॐ जय
आतम ज्ञान विरागी, सम दृप्टी धारी । स्वामी सम दृप्टी धारी ।
माया मोह, विनाशक, ज्ञान ज्योति धारी ।। ॐ जय
जग में पाठ अहिंसा, आप ही विस्तार्यो । स्वामी आप ही विस्तार्यो
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचारयो ।। ॐ जय
यह विधि चांदनपुर में, अतिशय दर्शायो । स्वामी अतिशय दर्शायो ।
ग्वाल मनोरथ पूरयो, दुध गाय पायो ।। ॐ जय
अमरचंद को सपना, तुमने प्रभु दीना । स्वामी तुमने प्रभु दीना ।
मंदिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना ।। ॐ जय
जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी । स्वामी अतिशय के सेवी ।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी ।। ॐ जय
जो कोई तेरे दर पर, इच्छा करि आवे । स्वामी इच्छा करि आवे ।
धन सुत सब कुछ पावे, संकट मिट जावे । ॐ जय
निश-दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जले । स्वामी जगमग ज्योति जले।
हम सेवक चरणों में, आनन्द मोद धरे ।। ॐ जय